वर्ष 44, अंक 4, जुलाई-अगस्त 20

गगनांचल

साहित्य, कला एवं संस्कृति का संगम

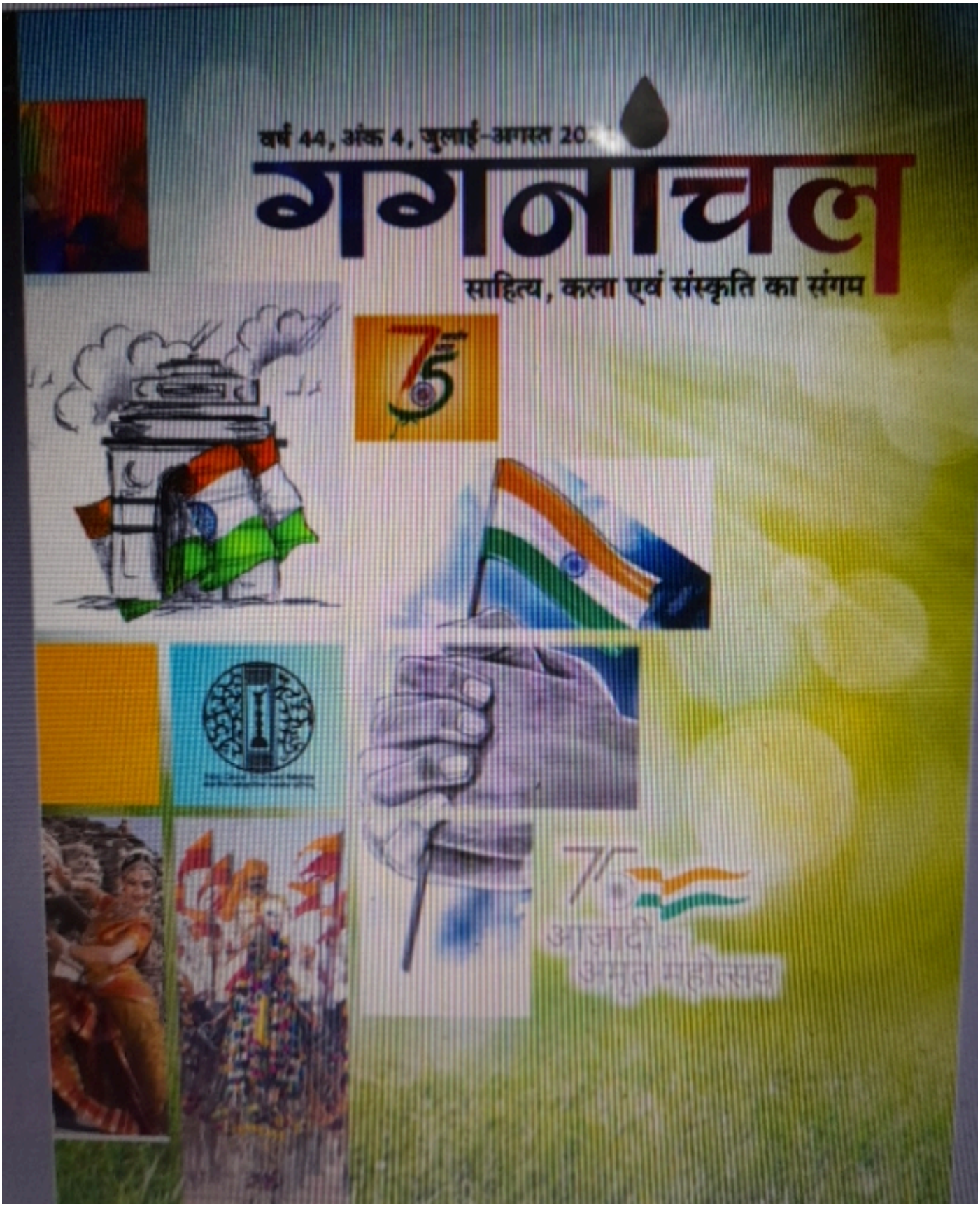

अनुक्रम

वर्ष 44, अंक 4, जुलाई-अगस्त 2021

गगनांचल

प्रकाशकीय

3 हिंदी का क्षितिज
दिनेश कुमार पटनायक

संपादकीय

4 लोकतंत्र में लोक-शुचिता का प्रश्न
डॉ. आशीष कंधवे

सांस्कृतिक-बोध

7 महात्मा गाँधी का वैष्णव मन और भारत बोध
प्रो. चंदन कुमार

संस्कृति-सभ्यता

10 रोमानी संस्कृति: एक भारतीय धरोहर
मो. जमीर अनवर

लोक-संस्कृति

14 श्री गुरू तेग बहादुर की वाणी में लोकमंगल की भावना
डॉ. गुरमीत सिंह

कथा-सागर

18 तुम्हारी गुड़िया
अंजु रंजन (साउथ अफ्रिका)

23 धर्म संकट
कादंबरी मेहरा (इंग्लैंड)

27 और सुबह हो गयी
डॉ. वंदना सहाय

दृष्टि-सृष्टि

31 कोरोना, जेल और संवाद के साधन के तौर पर टेलीफ्रेन
डॉ. वर्तिका नंदा

तात्त्विकता

35 सांस्कृतिक संक्रमण के युग में भारतीय दर्शन की उपादेयता: धर्म तथा नैतिकता के संदर्भ में
डॉ. श्रुति मिश्रा

चिंतन-मंथन

39 हिंदी गीतिकाव्य परंपरा और तुलसीदास
प्रो. अनिल राय

46 भूख की महागाथा के रूप में 'कफन' की सार्थकता
डॉ. मनीष

शोध संसार

49 समुद्र से व्यक्तित्व के धनी: सुब्रमण्यम भारती
डॉ. प्रताप राव कदम

53 भक्ति साहित्य और यूरोपीय समीक्षक
डॉ. ऋचा मिश्रा

57 सांस्कृतिक साम्राज्यवाद और गुरु गोबिंद सिंह जी का साहित्य
डॉ. शोभा कौर

61 पुष्पिता अवस्थी कृत 'छिन्नमूल' उपन्यास में गिरमिटिया कृषकों की वेदना
अकरम हुसैन

64 कवि केदारनाथ अग्रवाल की लोक-दृष्टि
डॉ. अभिषेक शर्मा

व्यक्ति-विशेष

67 वैश्विक समस्याओं का हल: पंडित दीनदयाल का दर्शन
डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय

सांस्कृतिक-वैविध्य

71 राष्ट्र गौरव और कृषि करुणा के कवि- मैथिलीशरण गुप्त
डॉ. संजीव दुबे

भाषा-विकास

75 तकनीकी समुन्नयन और हिंदी
कोमल

पुस्तक-समीक्षा

80 डॉ. विजया सती
81 द्विजेन्द्र द्विज

लघुकथा-कलश

82 उषा अग्रवाल पारस
83 अशोक वाधवाणी

काव्य-मधुवन

84 श्री अशोक भाटी
85 नंदा पाण्डेय
86 सुशील 'साहिल'
87 इंदु बैरट (इंग्लैंड)
88 डॉ. राम प्रवेश 'रजक'
89 वशिष्ठ अनूप
90 मनोज अबोध
91 आकर्ष बंसल (इंग्लैंड)

92 गतिविधियाँ : आई.सी.सी.आर.

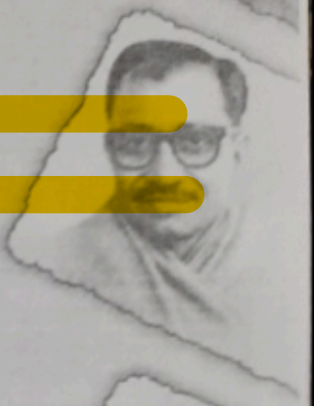

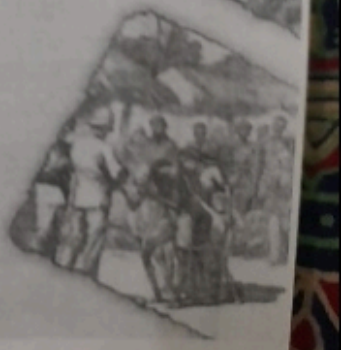

सांस्कृतिक साम्राज्यवाद और गुरु गोबिंद सिंह जी का साहित्य

डॉ. शोभा कौर

गुरु गोबिंद सिंह जी की सामाजिक संरचना में 'चंडी चरित्र' की महत्वपूर्ण भूमिका है। उनका युग सुर, सुरा और सुंदरी के आगोश में अकर्मण्यता की चरम सीमा पर था। ऐसे में उन्होंने भारतीय समाज को जगाने के लिए परम शक्ति के स्त्री रूप की भरपूर प्रशंसा ही तथा शक्ति आराधन के इस तरीके ने असर भी कर दिखाया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने सबसे अधिक शक्ति काव्य सृजित किए हैं। उनके संपूर्ण साहित्य में तीन शक्ति काव्य प्रमुख हैं 'चंडी चरित्र उक्ति विलास', 'चंडी चरित्र द्वितीय' एवं 'चंडी दी वार' इसके अतिरिक्त अकाल उस्तुति, कृष्णावतार, चरित्रोपाख्यान तथा अन्य रचनाओं में भी आद्या शक्ति का वर्णन है। गुरु गोबिंद सिंह जी की सामाजिक संरचना में दलित विमर्श और स्त्री अस्मिता जैसे प्रश्नों का व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक समाधान है। भजन, भोजन और युद्ध जो किसी समाज के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है, उनमें सिख गुरुओं ने जाति-पाति से रहित एक स्वस्थ समाज का सूत्रपात कर; उस समाज के सपने को साकार कर दिखाया जो दो ढाई सौ वर्ष बाद माओत्सेतुंग, लेनिन, स्टॅलिन आदि ने खूनी क्रांतियों से हासिल कर स्थापित किया। 'खालसा पंथ' भारत के सर्वहारा वर्ग का समाज था

सांस्कृतिक साम्राज्यवाद और गोबिंद-साहित्य पर बात करते हुए प्रश्न उठता है कि सांस्कृतिक साम्राज्यवाद क्या है? क्या गोबिंद-साहित्य भारतीय इतिहास और संस्कृति में कोई हस्तक्षेप करता है? क्या उनका काव्य सांस्कृतिक साम्राज्यवाद से लड़ने के लिए सामर्थ्य प्रदान करता है? क्या अपने समय की चुनौतियों से जूझने के लिए उनका साहित्य कोई विकल्प प्रस्तुत करता है? और क्या वह विकल्प 21 वीं सदी के दूसरे दशक में हमारे लिए उपयोगी है? उनके काव्य की क्या विशिष्टता है और क्या युगीन समानता है? उनका काव्य निरंतरता और परिवर्तन की कैसी मिसाल प्रस्तुत करता है?

- आज धार्मिक असहिष्णुता ज्यादा बढ़ रही है। धर्मों और नस्लों के बीच विग्रह, विघटन, दंगे और युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई है। वर्तमान में विभिन्न संस्कृतियों को परस्पर युद्धरत करने का विध्वंसक दर्शन कैसे उत्पन्न हुआ? गोबिंद साहित्य में धर्म जातीय स्मृतियों का हिस्सा है या मात्र भौतिक सत्य? उनका साहित्य धर्मसत्ता के खिलाफ धर्मयुद्ध कैसे साबित होता है? राजसत्ता के वर्चस्व को सीधे चुनौती देता उनका काव्य धर्मसत्ता के बरक्स क्या विकल्प प्रस्तुत करता है? क्या गोबिंद-साहित्य में धार्मिक समन्वय के कोई सूत्र मिलते है?
- क्या अर्थशास्त्रीय मूल्यों को दरकिनार करके अध्यात्म और धर्म को साधा जा सकता है? कैसे उनका व्यक्तित्व और कृतित्व भारतीत समाज और इतिहास में 'राज्य के भीतर राज्य की संकल्पना' को साकार करता है?
- 'कल्याणकारी राज्य' की अवधारणा क्या है? और गुरु गोबिंद सिंह भारतीय समाज की संरचना में ऐसे क्या आमूलचूल परिवर्तन कर देते हैं कि आज उनके आने के लगभग 313 वर्ष बाद भी सिख समाज अपने गुरु के दिखाए पद-चिन्हों पर अडिग एक कल्याणकारी राज्य की जीवंत संकल्पना से युक्त जीवन जी रहा है?
- धर्मसत्तायें अक्सर धर्म के प्राणतत्व-'अध्यात्म' को नष्ट कर देती है। अपने युग की विषम परिस्थितियों में गुरु जी ने कैसे भारतीय अध्यात्म के सर्वश्रेष्ठ मूल्यों- तत्त्वमसि और अहम् ब्रह्मास्मि को पुनर्जीवित किया?
- धर्मसत्ताओं ने लम्बे समय तक भारत में दार्शनिक सत्यों को रहस्य के गुंझलके में छिपाए रखा -और ब्रह्म, जीव, जगत, माया और मोक्ष जैसे विषयों को शास्त्रार्थ की स्वस्थ परम्परा से तर्क-कुतर्क की जटिल व्यवस्था द्वारा जन साधारण के लिए दूभर बना दिया। ऐसे में भक्ति आन्दोलन के प्रतिष्ठित संत-सिपाही गुरु गोबिंद सिंह जी ने कैसे दार्शनिक सत्यों को जनसुलभ करवाया?